महिला सुरक्षा पर एक अध्ययन

मदनपुर खादर जे. जे. कॉलोनी दिल्ली

यूएन हैबीटैट, नैरोबी की सहायता से
जागोरी द्वारा कार्यान्वित
अक्टूबर 2009 से 2010

महिला सुरक्षा पर एक अध्ययन

मदनपुर खादर जे. जे. कॉलोनी

दिल्ली

UN HABITAT
FOR A BETTER URBAN FUTURE

यूएन हैबीटैट, नैरोबी की सहायता से
जागोरी द्वारा कार्यान्वित
अक्टूबर 2009 से 2010

जागोरी
JAGORI

आभार

जागोरी निम्नलिखित संस्थाए द्वारा प्रदान की गई सहायता के लिए उनका हृदय से आभार प्रकट करती है:

यूएन हैबिटेट: सहायता और तकनीकी मदद के लिए सिसिलिया एंडरसन और पसक्वाले कापिजी का

जागोरी: युवाओं की दूरदृष्टि और परियोजना कार्य के लिए सुनीता धर, कल्पना विश्वनाथ, मधु बाला, कृति, फील्ड कार्यकर्ता सुनिता, सुरक्षित दिल्ली अभियान टीम और सुरभि टण्डन महरोत्रा का।

नक्शे व सुरक्षा ऑडिट में सक्रिय भागीदारी के लिए मदनपुर खादर की युवा टीम का – विशेषकर रमा, गीता, ललिता, संजय, सावित्री, रितु, राधा, अनीता, नीलम, राहुल, अमित, विनोद, राज, ओम प्रकाश, नीरज, साहिस्ता, पूजा, रोहित, और वीरेंद्र का

मैप डिजाइन: पारुल

पेज सज्जा: विनोद गुप्ता

जागोरी
बी–114, शिवालिक, मालवीय नगर, नई दिल्ली–110017
फोन: (011) 26691219 / 26691220, हेल्पलाइन: (26692700)
फैक्स: (011) 26691221
ईमेल: jagori@jagori.org, safedelhi@jagori.org

पृष्ठभूमि और संदर्भ

मदनपुर खादर जेजे कॉलोनी में लगभग डेढ़ लाख लोग रहते हैं जिन्हें वर्ष 2000 से 2003 तक के बीच में दक्षिण दिल्ली की झोंपड़पट्टियों से हटा कर यहां बसाया गया था। यह कॉलोनी दिल्ली–उत्तर प्रदेश की सीमा के निकट स्थित है। इस समुदाय के लोग सफाई कर्मचारियों, दफ्तरों में हैल्परों और मजदूरों के रूप में कार्य करते हैं। यहां काफी संख्या में महिलाएं घरों में काम करती हैं या फिर कोई अन्य अनौपचारिक काम करती हैं। पुरुष विभिन्न अनौपचारिक क्षेत्रों में मजदूरी करते हैं। विस्थापन की वजह से इनमें से कइयों को नौकरी से हाथ धोना पड़ा और आजीविका की तलाश उनके लिए एक बड़ी चुनौती बन गई। लगभग एक दशक होने को आया है और समुदाय अभी भी स्वच्छ जल, स्वच्छता सुविधा, कूड़ा निबटान और सड़कों पर पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था जैसी बुनियादी नागरिक सुविधाएं प्राप्त करने की चुनौतियों से जूझ रहा है। परिवहन यहां की एक मुख्य समस्या है क्योंकि यहां सरकारी बस सेवाएं उपलब्ध नहीं हैं और प्राइवेट बसों में महिलाओं और लड़कियों को अक्सर यौन हिंसा का सामना करना पड़ता है। मदनपुर खादर जेजे कॉलोनी के निवासियों का कहना है कि शौचालय काफी कम हैं –जिसमें से कई चालू हालत में नही है।

हाल तक मदनपुर खादर में स्थित स्कूल केवल आठवीं कक्षा तक था। इस वर्ष कक्षा–9 में पहले बैच का नामांकन हुआ है। उच्चतर कक्षाओं के लिए सबसे नजदीक सरिता विहार का स्कूल हैं जहां पहुंचने के लिए एक घंटा पैदल चलना पड़ता है। इस तरह लड़कियों के अधबीच पढ़ाई छोड़ने की दर (ड्राप आउट रेट) काफी अधिक हो सकती है क्योंकि माता–पिता इतनी दूर लड़कियों को भेजना सुरक्षित नहीं समझते। इसके अलावा लड़कियों को छोटी उम्र में विवाह के लिए पारिवारिक दबाव भी झेलना पड़ता है।

माता–पिता और साथ ही युवा लोग अपराध संबंधी मुद्दों को लेकर चिंतित हैं जैसे कि छोटीमोटी चोरियां, अड़ोस–पड़ोस में लड़ाई, नशीली दवाओं का सेवन, घरेलू हिंसा, आदि। लड़कियों से छेड़खानी आम बात है और हर समय, यहां तक कि शौचालय जाते समय यदि उनके साथ कोई रहे, तभी वे सुरक्षित महसूस करती है।

मदनपुर खादर जेजे कॉलोनी में मार्केट इलाका जलेबी चौक का है। वहां पर ज्यादातर दुकानें परचून, सब्जी की दुकानें, मीट की दुकानें, स्टेशनरी की दुकान, कुछ खाने–पीने की दुकानें मौजूद हैं। यह मार्केट इलाका सुबह 10 से रात के 9 बजे तक खुला रहता है। यहां पर चहल–पहल तो रहती है पर ज्यादातर पुरुष ही दिखाई देते है। यहां पर महिलाओं का कहना कि वे सुरक्षित महसूस नही करती हैं क्योकि लड़के प्रायः नषे में होते हैं या फिर गुंडा गर्दी वाला माहौल होता है।

समुदाय के बीच जागोरी का कार्य

एक महिला दस्तावेजीकरण, प्रशिक्षण और केंद्र के रूप में जागोरी की स्थापना 1984 में की गई थी। इसकी जड़ें महिला आंदोलन से जुड़ी हैं। यह भारत के कुछ ही महिला संगठनों में से एक है जिसे अपनी नारीवादी सोच और कार्य के लिए पिछले 25 वर्षों से लगातार गुणवत्तापूर्ण कार्य के लिए जाना जाता है। महिला मुद्दों से अलग दूसरे मुद्दों पर काम करने वाले संगठन और नेटवर्क भी इस तथ्य को स्वीकार करते हैं। इतना ही नहीं, जागोरी से यह अपेक्षा भी की जाती है कि वह नेतृत्व प्रदान करेगी और आंदोलन के निर्माण में अपनी भूमिका जारी रखेगी। पिछले 25 वर्षों में जागोरी ने घरेलू हिंसा, दहेज, बलात्कार, सती, वैवाहिक कानून, यौन उत्पीड़न, एकल महिला के अधिकार, प्रजनन स्वास्थ्य अधिकार जैसे मुद्दों पर अभियानों का नेतृत्व किया है। जागोरी ने महिलाओं पर होने वाली हिंसा का सफलतापूर्वक निरूपण किया है – चाहे यह हिंसा घरों के भीतर हो या उन सार्वजनिक स्थानों में जहां महिलाएं श्रमिकों/नागरिकों के रूप में होता है या फिर वह हिंसा जिसका सामना उन्हें शहरी नियोजन प्रक्रियाओं द्वारा विस्थापित किये जाने के दौरान करना पड़ता है। इस प्रकार देखें तो हिंसा का अंत करना और महिलाओं की सुरक्षा के मुद्दे को हल करना जागोरी के कार्य का मुख्य क्षेत्र रहा है।

जागोरी ने मदनपुर खादर के फेज–3 में समुदाय के भीतर मुख्यतः महिलाओं और किशोरियों के बीच अपने काम की शुरूआत वर्ष 2005 में की थी। धीरे–धीरे करके उसने हिंसा की समाप्ति के मुद्दों पर काम करते हुए युवाओं के बीच अपने कार्य का विस्तार किया तथा जेंडर, अधिकारों और यौनिकता के बारे में जानकारी के माध्यम से उनका सशक्तिकरण किया। युवा के उत्साह के चलते 2009 के आरंभ में यूएन हैबिटैट की सहायता से युवा और सुरक्षा विषय पर एक अग्रगामी पहल की गई जिसमें सिर्फ फेस–3 पर काम किया लेकिन 2010 तक आते–आते मदनपुर खादर जेजे कॉलोनी के 7 अन्य ब्लॉकों को इस मुददें से जोड़ा गया जिसका उद्देश्य युवा लोगों की सुरक्षा से संबंधित विभिन्न आयामों के बारे में जागरुकता पैदा करना था। यह परियोजना युवाओं को एक ऐसा मंच प्रदान करेगी जहां से वे अपने सरोकारों को आवाज दे सकेंगे और सभी हिस्सेदार पक्षों (स्टेकहोल्डर्स) को जवाब देह बना सकेंगे।

साइट प्लान

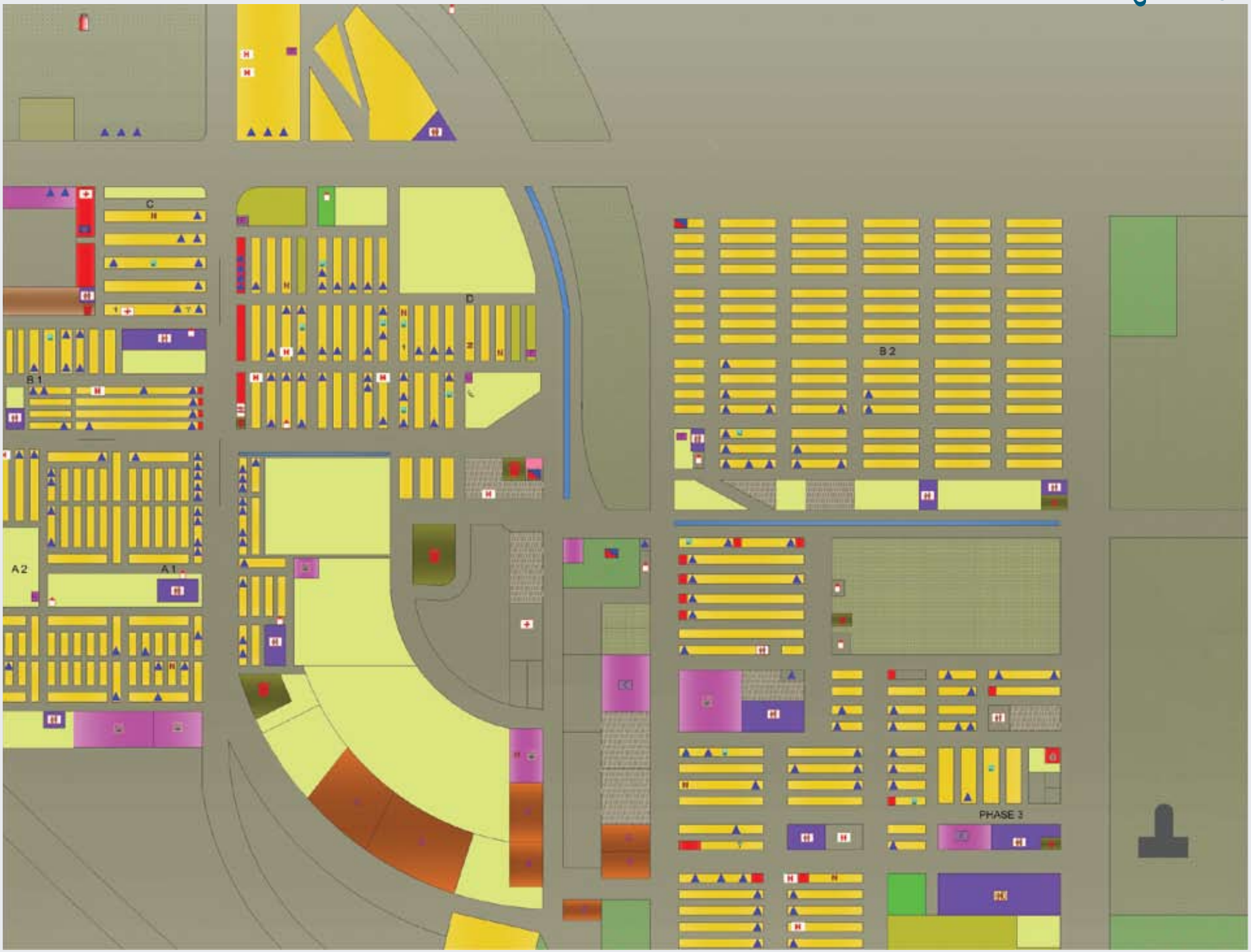

सुरक्षित दिल्ली अभियान

पिछले कुछ सालों से दिल्ली में औरतों की सुरक्षा लोगों के लिए एक चिन्ता का विषय बन गया है। अख़बार और पत्रिकायें बताती हैं कि औरतों के ख़िलाफ़ हिंसा हर दिन होने वाली घटना बन गई है। इसके अलावा विभिन्न संस्थाओं द्वारा की गई स्टडीज़ भी इसके आंकड़ों में इज़ाफा करती है। दिल्ली में औरतें घर और बाहर दोनों ही जगह आक्रमण, बलात्कार, हत्या, यौन शोषण के ख़तरे का षिकार होती है। सार्वजनिक जगहों में औरतों द्वारा यौन शोषण या हिंसा के अनुभवों में बढ़ोतरी हो रही है। डर और हिंसा के अनुभव औरतों और बच्चियों को उनके 'शहर के अधिकारों' की पहुंच को रोकती है। इसका दुष्प्रभाव उनके जीने, काम करने, पढ़ने और आजादी से घूमने पर पड़ता है।

औरतों के ख़िलाफ़ हिंसा आम बात हो गई है जो लगातार होती रहती है। चूंकि अधिक गंभीर और हिंसात्मक अपराध होते हैं, यह हर दिन होने वाली हिंसा और एक आम घटना बन कर रह गई है जो कि चिन्ता का विषय है। घूरना, छूना, पास से रगड़कर निकलना, सीटी बजाना, फब्बतियां कसना सार्वजनिक जगहों में औरतों पर होने वाली प्रतिदिन के अनुभव का हिस्सा है। शहर में औरतों का निकलना अधिक हो रहा है। उनसे यह उम्मीद की जाती है कि सार्वजनिक जगहों में जाने के लिए उपर्युक्त कारण हों कि वे किस समय, कहां और किस मकसद से जाती हैं।

2004 में जागोरी ने सुरक्षित दिल्ली अभियान की शुरूआत की ताकि इन मुद्दों पर काम किया जा सके। इस अभियान के शुरूआत में समस्याओं के प्रति जागरूकता लाने, भागीदारों की पहचान करने में, जो कि सुरक्षित शहर बनाने में अपनी भूमिका निभा सकते हैं, की दिशा में काम किया गया। (टाईमस् ऑफ इंडिया,'सीटि पुलिस लाक्स फेयर पावर, ओनली 7: आर वूमेन', 26 मई 2010)

यह अभियान औरतों की सुरक्षा के मुद्दे की ओर ध्यान आकर्षित करता है जो कि कई रणनीतियों को और नीतियों पर विचार करता है जो कि औरतों ओर लड़कियों के लिए सुरक्षित माहौल बनाने की दिषा में ज़रूरी है। यह इस धारणा पर आधारित है कि औरतों और बच्चियों को बिना किसी डर और असुरक्षा में जीने का हक है। इस अभियान का मुख्य विषय इस बात पर जोर डालना है कि औरतों के खिलाफ़ हिंसा केवल 'औरतों का मुद्दा' नहीं है। औरतों की सुरक्षा केवल औरतों की समस्याओं द्वारा तय नहीं की जा सकती, चाहे वो संस्था कितनी सक्रिय और प्रतिबद्ध क्यों न हो। और भी कई अन्य संस्थायें हैं जिन्हें अहम् भूमिका निभानी चाहिए और सुरक्षित माहौल बनाने में अपनी ज़िम्मेदारी निभा सकते हैं। इसलिए यह अभियान महिला संस्थाओं, स्वंय सेवी संस्थायें, नागरिक समूहों, सामुदायिक संस्थाओं, शैक्षिक संस्थाओं, पुलिस और कानून से जुड़ी संस्थाओं, प्रषासन और चुने प्रतिनिधि को शामिल करने और उनके बीच पार्टनरशिप बनाने की ओर फोकस करेगा।

ए-1

प्लॉट – 22 गज
शौचालय – 3
खुले स्थान – 2
डिस्पेंसरी – नही है
समुदाय केन्द्र – नही है
बस स्टॉप – नही है
बाजार – नही है
स्कूल – नही है
कूड़ादान – 1
पानी हाउस – 1
बारातघर – 1
बैंक – नही है
राशन की दुकान – नही है
मिट्टी तेल की दुकान – नही है
पार्क – नही है
प्लॉट संख्या – 1020

पॉकेट ए1

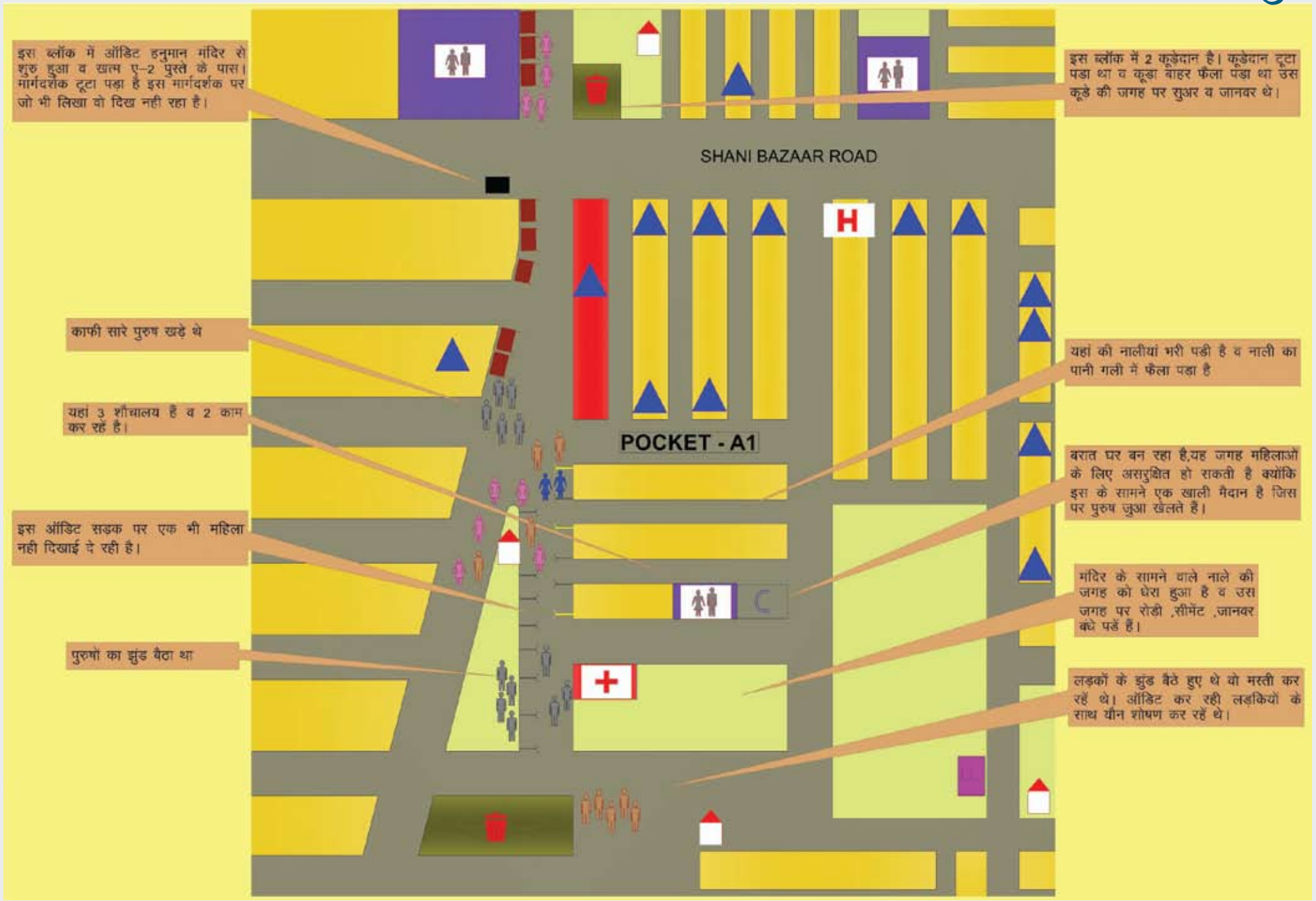
इस ब्लॉक में ऑडिट हनुमान मंदिर से शुरु हुआ व खत्म ए–2 पुस्ते के पास। मार्गदर्शक टूटा पड़ा है इस मार्गदर्शक पर जो भी लिखा वो दिख नही रहा है।
इस ब्लॉक में 2 कूड़ेदान है। कूड़ेदान टूटा पड़ा था व कूड़ा बाहर फैला पड़ा था उस कूड़े की जगह पर सुअर व जानवर थे।
SHANI BAZAAR ROAD
H
काफी सारे पुरुष खड़े थे
यहां की नालीयां भरी पड़ी है व नाली का पानी गली में फैला पड़ा है
यहां 3 शौचालय है व 2 काम कर रहें है।
POCKET - A1
बरात घर बन रहा है,यह जगह महिलाओं के लिए असुरक्षित हो सकती है क्योंकि इस के सामने एक खाली मैदान है जिस पर पुरुष जुआ खेलते है।
इस ऑडिट सड़क पर एक भी महिला नही दिखाई दे रही है।
मंदिर के सामने वाले नाले की जगह को घेरा हुआ है व उस जगह पर रोड़ी ,सीमेंट ,जानवर बंधे पड़ें हैं।
पुरुषों का झुंड बैठा था
लड़कों के झुंड बैठे हुए थे वो मस्ती कर रहें थे। ऑडिट कर रही लड़कियों के साथ यौन शोषण कर रहें थे।

पहल का मुख्य हिस्सा था जनता द्वारा शहर के विभिन्न भागों में औरतों, लड़कियों, लड़कों/पुरूषों और विभिन्न सहभागी संस्थाओं तक पंहुचना। बहुत सारी अभियान सामग्री भी बनाई गई जैसे पोस्टर, स्टीकर, टेलीविज़न विज्ञापन और एक फिल्म। जागरूकता लाने के लिए वर्कशाप और अभियान हुए। छात्र समूहों, दिल्ली परिवहन निगम, ऑटो रिक्शा, ड्राईवर युनियन, कान्फिडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्रीज् आदि के बीच महत्वपूर्ण पार्टनरशिप स्थापित की गई। सार्वजनिक जगहों पर धरने जुलूस, टैम्पो रैली और लगातार पर्चियां और हेल्पलाईन बुकलेट बांटे जाने, जैसी कई गतिविधियां की गईं। दिसम्बर 2005 में जागोरी ने पहली स्टेकहोल्डर मीटिगं की जिसमें पुलिस, रेसिडेन्ट एसोसिएशन, दिल्ली सरकार, शहरी योजनकर्ता और कई समूहों को शामिल किया गया। दिल्ली के लिए 2006 का मानव विकास रिर्पोट पहला दस्तावेज़ था जिसमें सार्वजनिक जगहों में औरतों की सुरक्षा के मुद्दे को महत्व दिया गया।

अभियान का मकसद है जेंडर भेदभाव को समझना और मैंपिगं रिसर्च तथा नीतियों के रिव्यूह से मिली जानकारी के आधार पर मध्यस्थता करना। सरकार, पुलिस, सिविल सोसाईटी संस्थायें, समुदाय और अन्य स्टेकहोल्डरों के पार्टनरशिप में मध्यस्थता करना ताकि औरतों और लड़कियों द्वारा झेली जाने वाली समस्याओं को कम किया जा सके और सार्वजनिक जगहों पर उनकी पंहुच और अधिकारों को बढ़ावा देने की सटीक योजना बनाई जा सके।

औरतों की सुरक्षा के लिए जैसे पुरूषों के साथ काम करना ज़रूरी है वैसे ही युवाओं के साथ भी काम करना ज़रूरी है। 2009 में जागोरी में 'यूथ और सेफ्टी प्रोग्राम' की शुरूआत की। युवाओं के साथ यह शुरूआत मदनपुर ख़ादर और बवाना के पुनर्वास कॉलोनी के युवा, पुरूष और औरतों को शामिल कर जेंडर आधारित सुरक्षा के मुद्दे पर फोकस करता है। (बवाना एक पुनर्वास कॉलोनी है जो उत्तर पष्चिमी दिल्ली में स्थित है, यहां वो लोग रहते हैं जिन्हें यमुना नदी के किनारे बसी बस्ती से हटाकर बसाया गया) यह प्रोजेक्ट जागोरी और नये युवा लीडरों को यह सोचने में मदद करता है कि उनके द्वारा उठाया गया कदम जैसे दिल्ली शहर के अन्य पुनर्वासित क्षेत्रों तक बढ़ाया जा सके। साथ ही एनजीओ के नेटवर्क के साथ भी पार्टनरशिप गहरा बनाया जा सके। इस प्रोजेक्ट का दूसरा चरण है मदनपुर खादर के 7 ब्लाक में कैसे इस मुद्दे पर काम किया जा सके।

जागोरी भी पहले से ही चल रही रिसर्च कार्यक्रम जिसमें औरतों के लीडरषीप तैयार करने में समुदाय की औरतों और युवा, बवाना और भलास्वा में औरतों की सुरक्षा पानी और सफाई व स्वास्थ्य सेवा पंहुच के मुद्दों को जेन्डर के नज़रिए से देखने परखने में जुड़े हैं। इस एक्षन रिसर्च का उद्देश्य है चुने समुदायों में युवा और औरतों की सोच तैयार करना व क्षमता बढ़ाना ताकि वो अपने स्थानीय सेवा व संसाधन के मैनेजमेंट व देखभाल को जेन्डर संवेदनशील से देख सकें, औरतों और लड़कियों के सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए। खोजों से पता चलता है कि घर चलाने, पानी भरने की लाईनों में समय बिताने, या दूसरे क्षेत्रों से पानी लाने या टॉयलेट की लाइनों में और इस सुविधाओं/सेवाओं को प्राप्त करने में अलग–अलग तरह की यौन हिंसा का सामना मुख्यतः औरतें और लड़कियां करती हैं क्योंकि इन कामों में प्राथमिक

सी

प्लॉट – 18 गज
शौचालय – 1
खुले स्थान – 1
डिस्पेंसरी – नही है
समुदाय केन्द्र – नही है
बस स्टॉप – निर्माण चौक
बाजार – जलेबी चौक बाजार
स्कूल – नहीं है
कूड़ादान – 1
पानी हाउस – 1
बारातघर – नही है
बैंक – जामिया कॉमर्स लिमिटेड
राशन की दुकान – 1
मिट्टी तेल की दुकान – 1
पार्क – नही है
प्लॉट संख्या – 270

पॉकेट सी

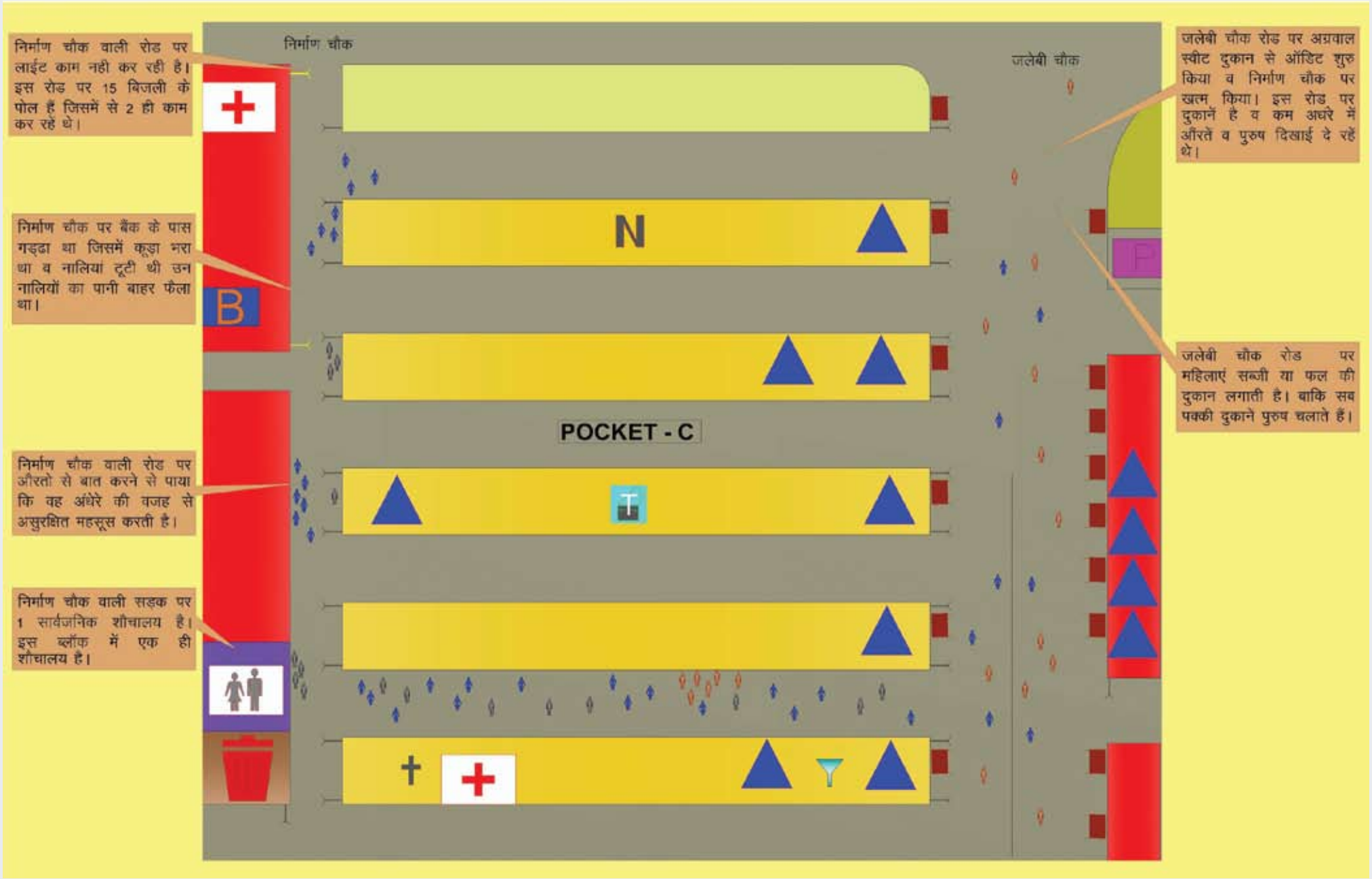
निर्माण चौक वाली रोड पर लाईट काम नही कर रही है। इस रोड पर 15 बिजली के पोल हैं जिसमें से 2 ही काम कर रहे थे।
निर्माण चौक पर बैंक के पास गड्ढा था जिसमें कूड़ा भरा था व नालियां टूटी थी उन नालियों का पानी बाहर फैला था।
निर्माण चौक वाली रोड पर औरतो से बात करने से पाया कि वह अंधेरे की वजह से असुरक्षित महसूस करती है।
निर्माण चौक वाली सड़क पर 1 सार्वजनिक शौचालय है। इस ब्लॉक में एक ही शौचालय है।
निर्माण चौक
जलेबी चौक
जलेबी चौक रोड पर अग्रवाल स्वीट दुकान से ऑडिट शुरु किया व निर्माण चौक पर खत्म किया। इस रोड पर दुकानें है व कम अधरे में औरतें व पुरुष दिखाई दे रहें थे।
जलेबी चौक रोड पर महिलाएं सब्जी या फल की दुकान लगाती है। बाकि सब पक्की दुकाने पुरुष चलाते हैं।
N
B
P
POCKET - C

जिम्मेदारी उन्हीं की होती है। वाट्सन सेवा के संदर्भ में इस्तेमाल की गई सेफ्टी ऑडि्स से पता चला कि औरतें/लड़कियां इन सेवाओं को प्राप्त करने में यौन हिंसा झेलती है । उदाहरण के लिए बहुत कीचड़ भरी रास्तों पर यौन हिंसा का या पुरूष बहुल क्षेत्रों में पानी भरते समय लड़कियों को यौन हिंसा झेलनी पड़ती है आदि।

यह देखा जा सकता है कि नए रिहायशी की योजना और अन्य ढांचों के निर्माण में यदि औरतों को शामिल न किया जाए तो इसके कारण औरतों के अधिकारों का हनन होता है। इन दो क्षेत्रों में जागोरी की पहल से औरतों और युवा में कोर समूह की क्षमता बढ़ाने का काम किया गया है स्थानीय गवर्मेंटस और उनके अधिकारों के मुद्दों पर।

सुरक्षित दिल्ली पहल को जेंडर इन्क्लूसिव सिटिज़ (जीआईसी)[1] द्वारा आगे बढ़ाया गया, और डिपार्टमेंट आफ विमेन एण्ड चाइल्ड डेवलपमेंट, दिल्ली सरकार के पार्टनरशिप में इन कार्यक्रमों को लागू किया गया। यह अभियान डिपार्टमेंट आफ विमेन एण्ड चाइल्ड डेवलपमेंट, दिल्ली सरकार द्वारा जागोरी यूनिफेम यूनहैबिटेट के सहयोग से 25 नवम्बर 2009 अंतर्राष्ट्रीय महिला हिंसा विरोध दिवस को लान्च किया गया, इसके बाद कई सरकारी और गैर सरकारी स्टेकहोल्डरों द्वारा रणनीति योजना की दिशा में राज्यस्तरीय बेसलाईन और स्टेकहोल्डर कन्सल्टेशन किया गया। कैम्पेन की शुरूआत असुरक्षा के मुद्दों और औरतों के हिंसा के अनुभवों के आधार पर हुई, स्ट्रीट सर्वे, फोकस ग्रुप और औरतों की सेफ्टी ऑडिट[2] के तरीकों द्वारा की गई जिन्हें अपनाया गया और इस्तेमाल में लाया गया। रिसर्च से पता चला कि औरतों द्वारा हिंसा के अनुभव और हिंसा का डर, दिन रात हर समय हर तरह के सार्वजनिक जगहों पर हुआ। ऑडिट बताते हैं कि दिन रात किसी भी समय सार्वजनिक जगहों पर औरतों ने असुरक्षा और डर का अनुभव किया। सार्वजनिक जगहों पर कोई कल्चर न होना और पुरूषों के वर्चस्व के कारण औरतों में असुरक्षा की भावना बढ़ती है जो कि उन्हें सहजता[3] से शहर के विभिन्न भागों में आने जाने से रोकती है। ऑडिट उन मुद्दों की ओर इंगित करता है कि औरतों के सुरक्षा को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक हैं इन्फ्रास्ट्रक्चर, जगहों के इस्तेमाल और पुलिस तथा सामाजिक संस्थाओं पर लोगों में बढ़ रहा अविश्वास।

बी–1
प्लॉट – 18 गज
शौचालय – 3
खुले स्थान – 2
डिस्पेंसरी – नही है
समुदाय केन्द्र – नही है
बस स्टॉप – नही है
बाजार – दैनिक सब्जी बाजार
स्कूल – नही है
कूड़ादान – 1
पानी पम्प – नही है
बारातघर – नही है
बैंक – नही है
राशन की दुकान – नही है
मिट्टी तेल की दुकान – नही है
प्लॉट संख्या – 1100

1 विमेन इन सिटिज् इन्टरनेशनल द्वारा प्रोजेक्ट चलाया जा रहा है और यूएनट्रस्ट फंड द्वारा सर्पोट है ताकि चार अलग–अलग शहरों में औरतों के साथ हो रही हिंसा को खत्म किया जा सके।

2 विमेन्स सेफ्टी ऑडिट एक पार्टिसिपेटरी टूल है जिसमें सार्वजनिक जगहों में सुरक्षा पर लोगों की समझ की जानकारी इकट्ठी की जा सके। यह एक प्रक्रिया है जंहा लोग इकट्ठे होकर माहौल सुरक्षा के मुद्दों पर बात करते हैं और सुरक्षा के रास्ते निकालते हैं। यह इस बात पर आधारित है कि जो जगह का इस्तेमाल करता है वही अच्छे से समझता है। यह मैथडोलॉजी टोरेन्टो, कैनेडा (1989 में मैट्रेक द्वारा विकसित किया गया था। इस बारे में सेफ्टी ऑडिट सेक्शन में व्यापक चर्चा होगी।)

3 कल्पना विश्वनाथ और सुरभि टंडन मेहरोत्रा 'सेफ इन द सिटी? सेमिनार, 2008

पॉकेट बी1

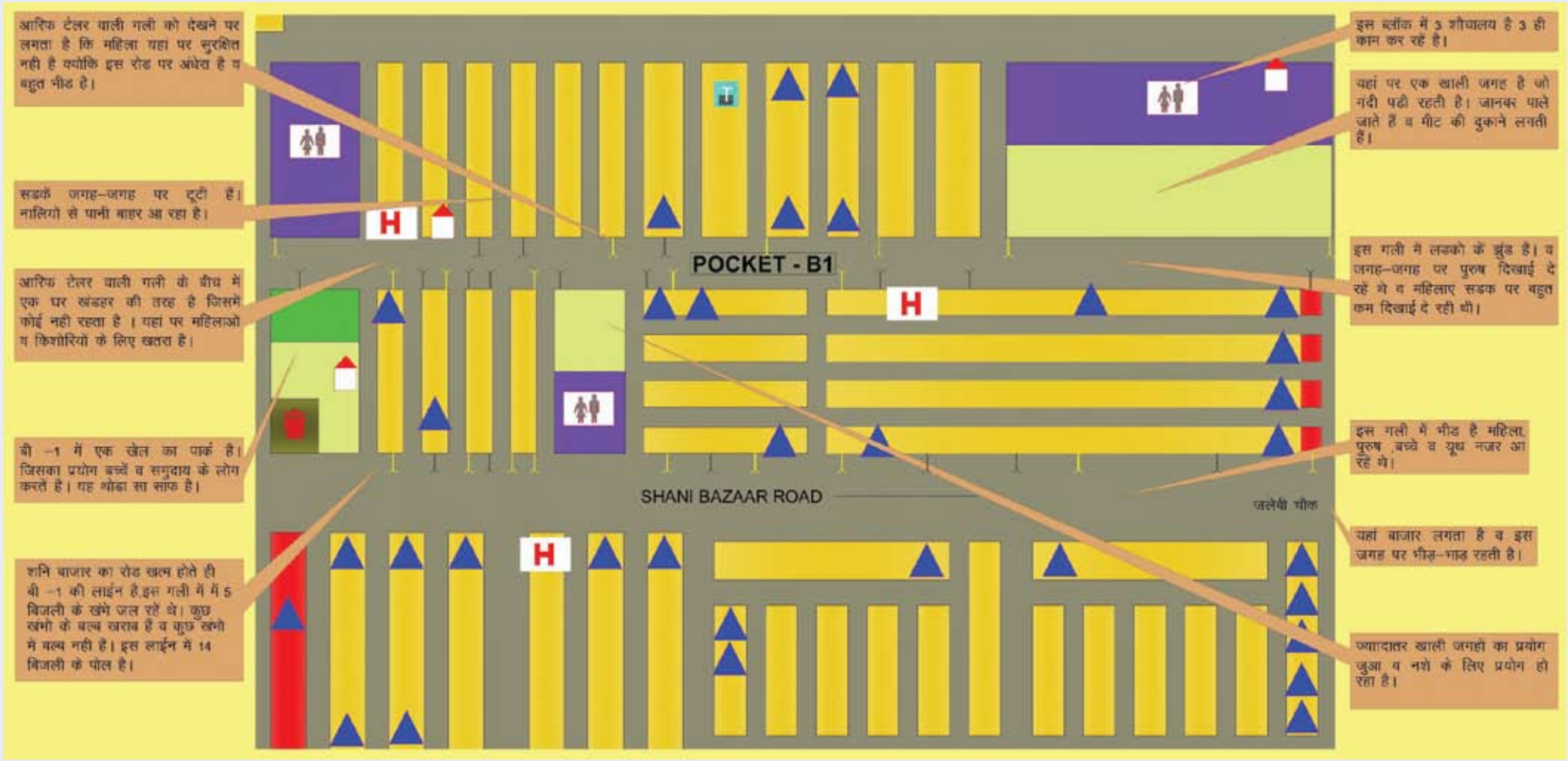
आरिफ टेलर वाली गली को देखने पर लगता है कि महिला यहा पर सुरक्षित नही है क्योंकि इस रोड पर अंधेरा है व बहुत भीड है।
सडकें जगह–जगह पर टूटी हैं। नालियों से पानी बाहर आ रहा है।
आरिफ टेलर वाली गली के बीच में एक घर खंडहर की तरह है जिसमें कोई नही रहता है । यहां पर महिलाओ व किशोरियों के लिए खतरा है।
बी –1 में एक खेल का पार्क है। जिसका प्रयोग बच्चें व समुदाय के लोग करते है। यह थोडा सा साफ है।
शनि बाजार का रोड खत्म होते ही बी –1 की लाईन है,इस गली में मैं 5 बिजली के खंभे जल रहें थे। कुछ खंभो के बल्ब खराब हैं व कुछ खंभो मे बल्ब नही है। इस लाईन में 14 बिजली के पोल है।
POCKET - B1
SHANI BAZAAR ROAD
जलेबी चौक
इस ब्लॉक में 3 शौचालय है 3 ही काम कर रहें है।
यहां पर एक खाली जगह है जो गंदी पडी रहती है। जानवर पाले जाते हैं व मीट की दुकाने लगती हैं।
इस गली मे लडको के झुंड है। व जगह–जगह पर पुरुष दिखाई दे रहे थे व महिलाए सडक पर बहुत कम दिखाई दे रही थी।
इस गली में भीड है महिला, पुरुष ,बच्चे व यूथ नजर आ रहे थे।
यहां बाजार लगता है व इस जगह पर भीड़–भाड़ रहती है।
ज्यादातर खाली जगहो का प्रयोग जुआ व नशे के लिए प्रयोग हो रहा है।

दूसरे रिसर्च और आंकड़ों के साथ इस रिसर्च के तथ्य स्टेकहोल्डरों, राज्य और सिविल सोसायटी के पार्टनरशिप में कार्यक्रमों को योजनाबद्ध करने में मददगार होगा ताकि औरतों के सुरक्षा और अर्बन प्लानिंग में जेंडर को शामिल किया जा सके और उसे मुख्य स्त्रोत का हिस्सा बनाया जाए।

शहरी विकास और समाज को शामिल करने में व्यापक ढांचें में सुरक्षा के मुद्दे को लेकर काम करना एक अनोखा प्रयास है। इससे शहर के जगहों में सुरक्षा का पता चलता है, और यह भी कि औरतों और अन्य कमजोर समूह के लोग बिना किसी डर के इन तक आसानी से पंहुच तो पाते हैं। जेंडर आधारित हिंसा को अकेली घटना की तरह न देखकर गरीबी, उम्र अपंगता और दूसरे कामजोरों के परिपेक्ष्य में मुद्दों को देखता है। उन कारणों को पहचानना जो गैरबराबरी को बढ़ाते हैं, चिन्ता डर और असुरक्षा को बढ़ावा देते हैं, प्रोजेक्ट औरतों को शहर का अभिन्न हिस्सा बनाने की दिशा में काम कर रहा है और उन्हें सक्षम बनाने के लिए ताकि वे अपने अधिकार फिर से ले सके।

ए-2

प्लॉट – 12 ,18 गज
शौचालय – 3
खुले स्थान – 3
डिस्पेंसरी – नही है
समुदाय केन्द्र – नही है
बस स्टॉप – नही है
बाजार – नही है
स्कूल – 1 सरकारी स्कूल 5 वीं तक
1 सरकारी स्कूल 10 वीं तक
कूड़ादान– 1
पानी हाउस – 1
बारातघर – नही है
बैंक – नही है
राशन की दुकान – नही है
मिट्टी तेल की दुकान – 1
पार्क – नही है
प्लॉट संख्या – 2143

"हमारे पास इतना पैंसा ही नही है कि हर रोज परिवार के लिए 14 से 20 रु शौचालय के लिए निकाल पाएं इसलिए मैं बाहर शौच के लिए जाती हूं ताकि मेरे बच्चों को बाहर खुले में ना जाना पड़े। "

(मदनपुर खादर जे.जे की एक महिला

पॉकेट ए2

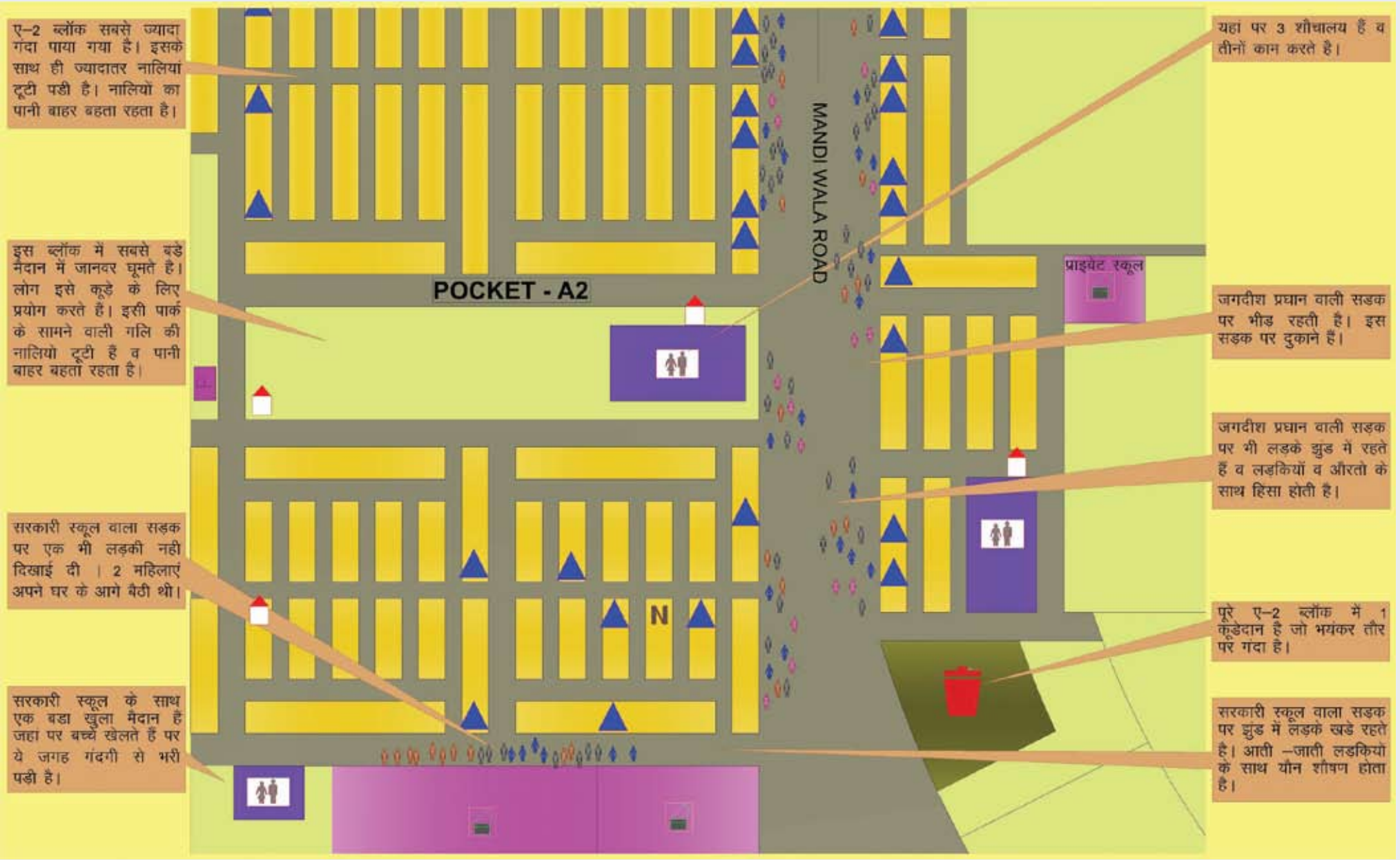
ए–2 ब्लॉक सबसे ज्यादा गंदा पाया गया है। इसके साथ ही ज्यादातर नालियां टूटी पडी है। नालियों का पानी बाहर बहता रहता है।
इस ब्लॉक में सबसे बडे मैदान में जानवर घूमते है। लोग इसे कूडे के लिए प्रयोग करते हैं। इसी पार्क के सामने वाली गलि की नालियो टूटी हैं व पानी बाहर बहता रहता है।
सरकारी स्कूल वाला सड़क पर एक भी लड़की नही दिखाई दी । 2 महिलाएं अपने घर के आगे बैठी थी।
सरकारी स्कूल के साथ एक बडा खुला मैदान है जहा पर बच्चे खेलते हैं पर ये जगह गंदगी से भरी पडी है।
POCKET - A2
MANDI WALA ROAD
N
प्राइवेट स्कूल
यहां पर 3 शौचालय हैं व तीनों काम करते है।
जगदीश प्रधान वाली सडक पर भीड रहती है। इस सड़क पर दुकाने हैं।
जगदीश प्रधान वाली सड़क पर भी लड़के झुड मे रहते हैं व लड़कियों व औरतो के साथ हिसा होती है।
पूरे ए–2 ब्लॉक में 1 कूडेदान है जो भयंकर तौर पर गंदा है।
सरकारी स्कूल वाला सड़क पर झुंड में लड़के खडे रहते है। आती –जाती लडकियो के साथ यौन शोषण होता है।

महिला सुरक्षा ऑडिट

महिला सुरक्षा ऑडिट (डब्ल्यू एस ए) सार्वजनिक स्थानों में सुरक्षा के बारे में जानकारी एकत्र कर उसका आकलन करने का एक सहभागी उपकरण है। इस प्रक्रिया के अंतर्गत भौतिक वातावरण से मिलकर गुजरते हैं, यह मूल्यांकन करते हैं कि यह वातावरण कितना सुरक्षित है और फिर उसे सुरक्षित बनाने के तरीकों की पहचान करते हैं। यह कार्य इस मान्यता पर आधारित है कि उपयोग करने वाले उस स्थान की समझ के विशेषज्ञ होते हैं। इस पद्धति को एम ई टी आर एसी ने टोरंटो, कनाडा में 1989 में तैयार किया था और फिर इसका विश्व में 40 शहरों में उपयोग किया गया।

क्षेत्र का मानचित्रणः सुरक्षा ऑडिट पद्धति

जागोरी की टीम ने मदनपुर खादर के युवा कार्यकर्ताओं को सुरक्षा ऑडिट पद्धति का प्रशिक्षण दिया। इसके अंतर्गत निर्धारित स्थानों में भ्रमण कर उन कारकों का विश्लेशण किया गया जो इन स्थानों को सुरक्षित या असुरक्षित बनाते हैं। निर्मित स्थानों और इंफ्रास्ट्रक्चर (रोशनी, शौचालय, रास्ते और पार्क) की जाँच–पड़ताल की गई तथा साथ ही यह पता लगाया गया कि पुलिस बूथ, सार्वजनिक टेलिफोन, दुकानें और अन्य विक्रेता कहां–कहां हैं। जहां केवल पुरुषों का आना–जाना था उन स्थानों की और साथ ही उन स्थानों की जहां समुदाय की महिलाओं और लड़कियों का अधिक आना–जाना था, पहचान की गई। यह ऑडिट असुरक्षा संबंधी समझ को समान महत्व देता है। इसलिए सुरक्षा ऑडिट के अंतर्गत यह दर्ज किया जाता है कि क्या रोशनी सही थी या नहीं, चीजें साफ नजर आ रही थीं या किसी चीज की आड़ में थीं, क्या सड़कें टूटी–फूटी थी और वहां कूड़ा–करकट बिखरा पड़ा था। महिलाओं के लिए यह जगह कितनी सुरक्षित व असुरक्षित है।

सुरक्षा ऑडिट से निकले मुख्य बिन्दु

युवाओं ने निम्नलिखित बातें दर्ज की

सड़कें

- पुश्ते वाली सड़क असुरक्षित है क्योंकि वहां रोशनी का प्रबंध नहीं है और इस सड़क से होकर ही महिलाएं और लड़कियां नहर क्षेत्र में शौच के लिए जाती हैं।
- खुले मैदान की ओर जाने वाली सड़क की लाइटें टूटी हुई हैं।
- फेस 3, सी व बी–2 में के भीतर की कुछ सड़कें साफ हैं क्योंकि लोग अपने घरों के आसपास की जगह को

डी

प्लॉट – डी1 में 12 ,डी 2 में 18 गज
शौचालय – 1
खुले स्थान – 8
डिस्पेंसरी – नही है
समुदाय केन्द्र – नही है
बस स्टॉप – हाँ
बाजार – साप्ताहिक शनी बाजार
स्कूल– 5 वीं तक का एक सरकारी स्कूल
कूड़ादान – 2
पानी पम्प –2
बारातघर – नही है
बैंक – नही है
राशन की दुकान – 3
मिट्टी तेल की दुकान – 2
प्लॉट संख्या – 2009

पॉकेट डी

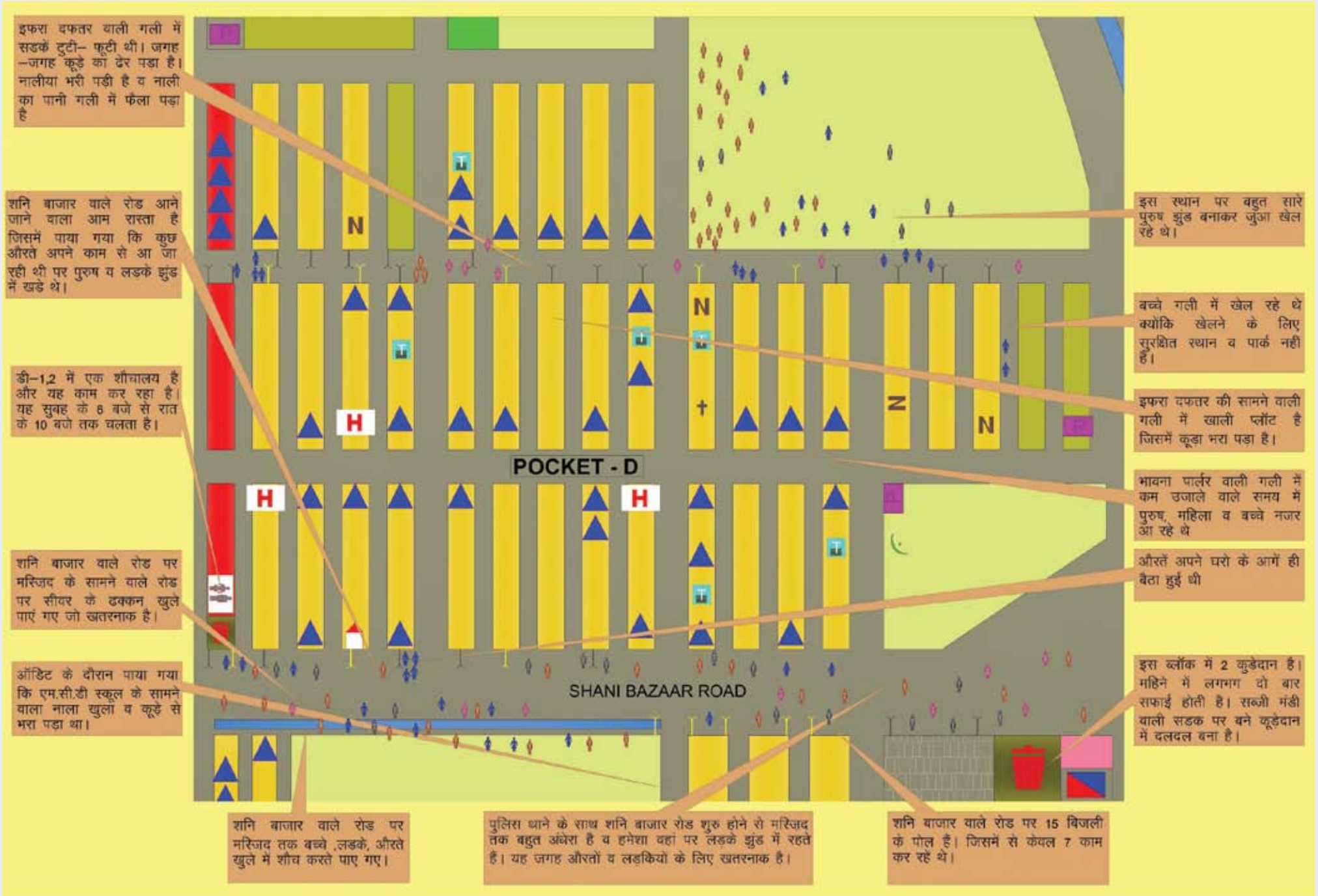
इफरा दफतर वाली गली में सडकें टुटी– फूटी थी। जगह –जगह कूड़े का ढेर पड़ा है। नालीया भरी पड़ी है व नाली का पानी गली में फैला पड़ा है
शनि बाजार वाले रोड आने जाने वाला आम रास्ता है जिसमें पाया गया कि कुछ औरते अपने काम से आ जा रही थी पर पुरुष व लड़के झुंड में खडे थे।
डी–1,2 में एक शौचालय है और यह काम कर रहा है। यह सुबह के 6 बजे से रात के 10 बजे तक चलता है।
शनि बाजार वाले रोड पर मस्जिद के सामने वाले रोड पर सीवर के ढक्कन खुले पाए गए जो खतरनाक है।
ऑडिट के दौरान पाया गया कि एम.सी.डी स्कूल के सामने वाला नाला खुला व कूड़े से भरा पड़ा था।
इस स्थान पर बहुत सारे पुरुष झुंड बनाकर जुआ खेल रहे थे।
बच्चे गली में खेल रहे थे क्योंकि खेलने के लिए सुरक्षित स्थान व पार्क नही हैं।
इफरा दफतर की सामने वाली गली में खाली प्लॉट है जिसमें कूड़ा भरा पड़ा है।
भावना पार्लर वाली गली में कम उजाले वाले समय में पुरुष, महिला व बच्चे नजर आ रहे थे
औरतें अपने घरो के आगें ही बैठा हुई थी
इस ब्लॉक में 2 कुडेदान है। महिने में लगभग दो बार सफाई होती है। सब्जी मंडी वाली सडक पर बने कूड़ेदान में दलदल बना है।
शनि बाजार वाले रोड पर मस्जिद तक बच्चे ,लडके, औरते खुले में शौच करते पाए गए।
पुलिस थाने के साथ शनि बाजार रोड शुरु होने से मस्जिद तक बहुत अंधेरा है व हमेशा वहां पर लड़के झुंड में रहते हैं। यह जगह औरतों व लड़कियों के लिए खतरनाक है।
शनि बाजार वाले रोड पर 15 बिजली के पोल हैं। जिसमें से केवल 7 काम कर रहें थे।
POCKET - D
SHANI BAZAAR ROAD

साफ रखते हैं। लेकिन अन्य ब्लॉकों में सफाई नही है।

- किसी भी ब्लॉक की सड़कों पर मार्गदर्शक नही है। केवल कुछ ब्लॉक की गलियों में मकान नम्बर पड़ें है।
- विकलांग लोगो के लिए रोड पर अलग से चलने के लिए जगह नही है। आम सड़क की भी हालत ठीक नही है। जगह–जगह पर सड़के टूटी हुई हैं।

पार्क और मैदान

- पार्क का एक हिस्सा मवेशियों से घिरा रहता है। टूटे हुए मकानों मलबा पार्क में बिखरा रहता हैं।
- गड्ढा कॉलोनी से जुड़ा बड़ा मैदान साफ है और इसका उपयोग शादियों आदि के लिए किया जाता है।
- ऑडिट के दौरान पाया कि पूरे मदनपुर खादर जे,जे, कॉलोनी में जो भी खाली मैदान हैं उनका प्रयोग जुए, नशा या फिर पुरुषों द्वारा गुटबाजी के लिए इस्तेमाल होता है।
- ऑडिट के दौरान पाया कि पूरे मदनपुर खादर जे,जे, कालोनी में खेलने वाले केवल 3 पार्क ही दिखे व मालूम हुए।
- अधिकतर क्षेत्रों में लड़के और पुरुष ही दिखाई देते हैं।

नालियां, शौचालय, कचरा आदि

- सड़क के किनारे बना शौचालय काम नहीं करता और उसे तोड़–फोड़ दिया गया है।
- शादी–ब्याह के लिए बनाया गया कम्यूनिटी हाल काम का नहीं है।
- कचरे के ढेर बड़े क्षेत्र में फैले हुए हैं; यहां के निवासियों का कहना कि इसकी सफाई कभी–कभी ही की जाती है।
- जूनियर इंजीनियर के कार्यालय के इर्द–गिर्द पास के कूड़े के ढेर का कूड़ा–कचरा बिखरा रहता है। एक व्यक्ति कार्यालय के सामने पार्क के लिए छोड़ी गई इस जमीन के एक हिस्से में अपनी बकरियां बांधता है।
- ऑडिट के दौरान अलग–अलग ब्लॉक में पाया कि कूड़ेदान की संख्या ज्यादा नही है और हर ब्लॉक में दो से ज्यादा कूड़ेदान नही हैं व हर ब्लॉक में कम से कम 900 परिवार तो रहते ही हैं।
- जो कूड़ेदान मौजूद हैं भी उनका कूड़ा महिनें में तीन या चार बार से ज्यादा उठाया भी नही जाता है। कूड़ा कूड़ेदान से बाहर पड़ा रहता है व वहां जानवर घूमते रहते हैं और में साथ बच्चें वहीं पर खेलते हैं।

"मेरी मां मुझे अंधेरे के बाद घर से निकलने नही देती है,वो कहती हैं कि यहां का माहौल बहुत खराब है।"

(मदनपुर खादर जे.जे की एक किशोरी)

बी–2

प्लॉट – 18 गज
शौचालय – 3
खुले स्थान – 5
डिस्पेंसरी – नही है
समुदाय केन्द्र – नही है
बस स्टॉप – आर,टी,वी कभी कभार रुकती हैं
बाजार – नही है
स्कूल – नही है
कूड़ादान – 1
पानी पम्प – 1
बारातघर – नही है
बैंक – नही है
राशन की दुकान – नही है
मिट्टी तेल की दुकान – नही है
प्लॉट संख्या – 925

पॉकेट बी2

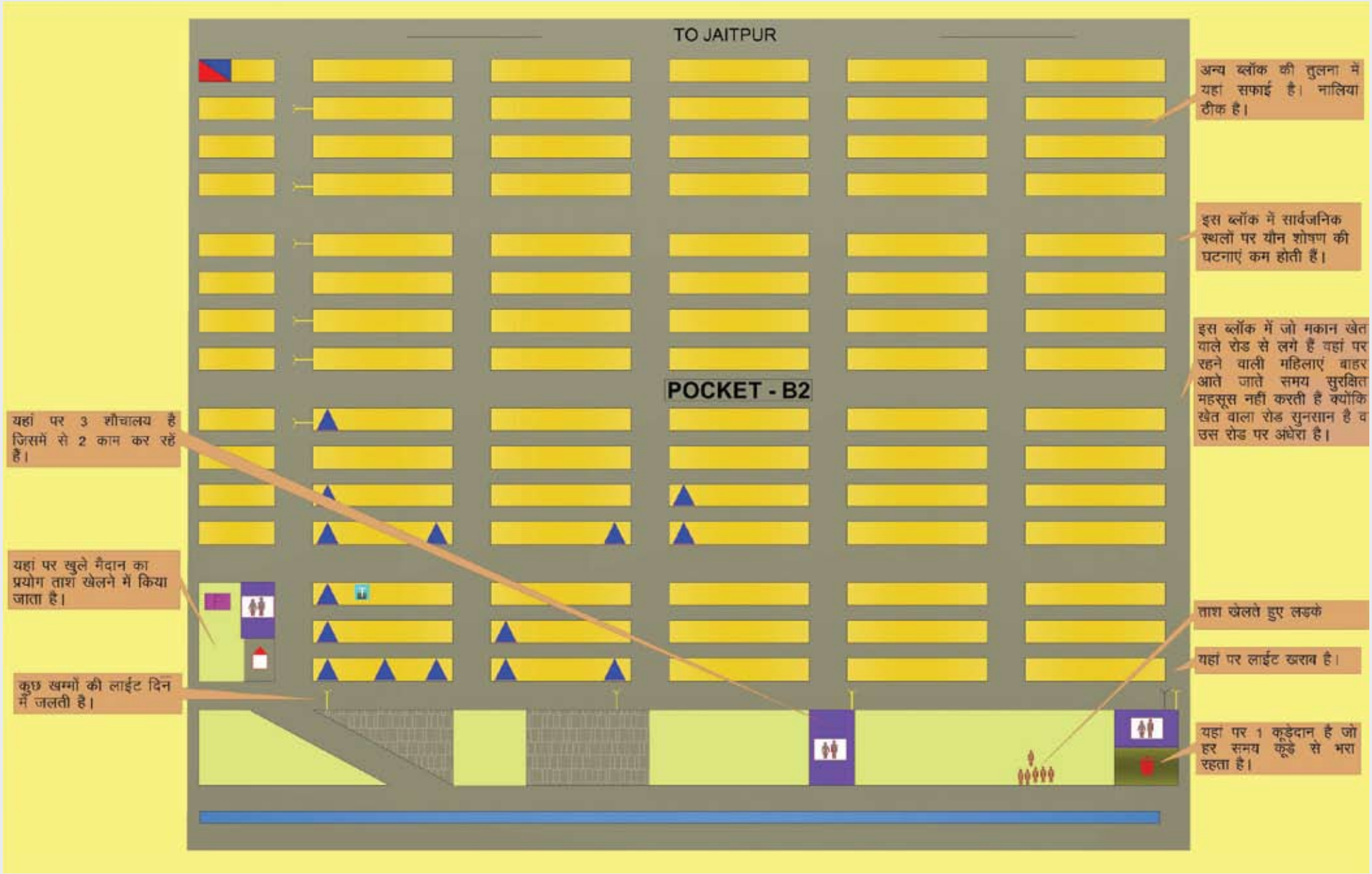
TO JAITPUR
POCKET - B2
अन्य ब्लॉक की तुलना में यहां सफाई है। नालिया ठीक है।
इस ब्लॉक में सार्वजनिक स्थलों पर यौन शोषण की घटनाएं कम होती हैं।
इस ब्लॉक में जो मकान खेत वाले रोड से लगे हैं वहां पर रहने वाली महिलाएं बाहर आते जाते समय सुरक्षित महसूस नही करती है क्योंकि खेत वाला रोड सुनसान है व उस रोड पर अंधेरा है।
यहां पर 3 शौचालय है जिसमें से 2 काम कर रहें हैं।
यहां पर खुले मैदान का प्रयोग ताश खेलने में किया जाता है।
कुछ खम्भों की लाईट दिन में जलती है।
ताश खेलते हुए लडके
यहां पर लाईट खराब है।
यहां पर 1 कूड़ेदान है जो हर समय कूड़े से भरा रहता है।

- ऑडिट के दौरान पाया गया, पूरे मदनपुर खादर जे,जे, कालोनी में शौचालय की संख्या 22 है।
- ऑडिट के दौरान पाया गया, पूरे मदनपुर खादर जे,जे, कालोनी में 8 कूड़ेदान हैं।
- नालियां गंदी हैं। औसतन तौर पर कहें तो महीने में केवल एक बार मदनपुर खादर जे.जे. कालोनी की नालियों की सफाई होती है।
- हर ब्लॉक की नालियां भरी पड़ी रहती हैं व नालियां बहती रहती हैं। नालियों से बाहर पानी बहता रहता है।

अन्य

- ऑडिट के दौरान पाया गया कि आपातकालीन फोन सुविधा नही है। पी.सी.ओ. बूथ हैं जिन्हें दुकानदार चलातें हैं और दुकाने लगभग रात के 10 बजे तक बंद हो जाती हैं। उसके बाद लोगो के पास आपातकालीन फोन सुविधा नही है।
- यातायात के साधनों में कमी है। मदनपुर खादर जे.जे. कालोनी में सरकारी बसें नही हैं। यहां पर केवल प्राईवेट वैन व आर,टी,वी ही है। यहां के निवासी आने–जाने के लिए इन्ही यातायात के साधनों पर निर्भर है।
- मदनपुर खादर जे.जे. कालोनी में यातायात के साधनों में महिलाओं के लिए सुरक्षा का माहौल नही है क्योंकि इन वैन का साईज छोटा है जिस वजह से भीड़ बहुत होती है। इन वैन व आर,टी,वी के ड्राईवर व कंडक्टर भी महिलाओं व लड़कियों के साथ अष्लील हरकतें व भददी भाषा का प्रयोग करते हैं।
- ये सभी वैन व आर,टी,वी जलेबी चौक पर खड़ी होती हैं। यहां पर कोई बस स्टैड नही है। अपनी मर्जी से चालक वैन व आर,टी,वी का यहां खड़ा करते हैं। इसके साथ ही यहां पर रोषनी की कोई व्यवस्था नही है।
- सरकार द्धारा सुनिश्चित की गई सरकारी बस डिपो फेस 3 व डी ब्लॉक के बीच में है। पर अभी सिर्फ वहां पर बोंड ही लगा है।
- पूरे इलाके में सुरक्षा के नजरिए से पुलिस वैन घूमती दिखाई नही देती है। लोगो का कहना है कि पुलिस वाले माहौल को ज्यादा असुरक्षित बनाते है क्योंकि पुलिस कर्मी वहां पर लोगो को तंग करना है। सुचारु रुप से पुलिस कर्मी काम नही करते हैं।
- मदनपुर खादर जे.जे. कालोनी में मार्केट इलाका जलेबी चौक पर है व सप्ताह का एक शनिवार मार्केट लगता हैं।
- उन्होंने यह भी कहा कि समुदाय ने उक्त मुद्दों को हल करने के लिए सामूहिक रूप से पर्याप्त कार्रवाई नहीं की है।

फेज 3

प्लॉट – 12,18 गज
शौचालय – 7
खुले स्थान – 5
डिस्पेंसरी – नही है
समुदाय केन्द्र – 1
बस स्टॉप – बी 2 का स्टॉप प्रयोग किया जाता है
बाजार – नही है
स्कूल – 5 वीं तक का एक सरकारी स्कूल
कूड़ादान – 3
पानी पम्प – नही है
बारातघर – 1 है पर प्रयोग में नही आता बंद है
बैंक – नही है
राशन की दुकान – 2
मिट्टी तेल की दुकान – 2
प्लॉट संख्या – 2355

फेज़ 3

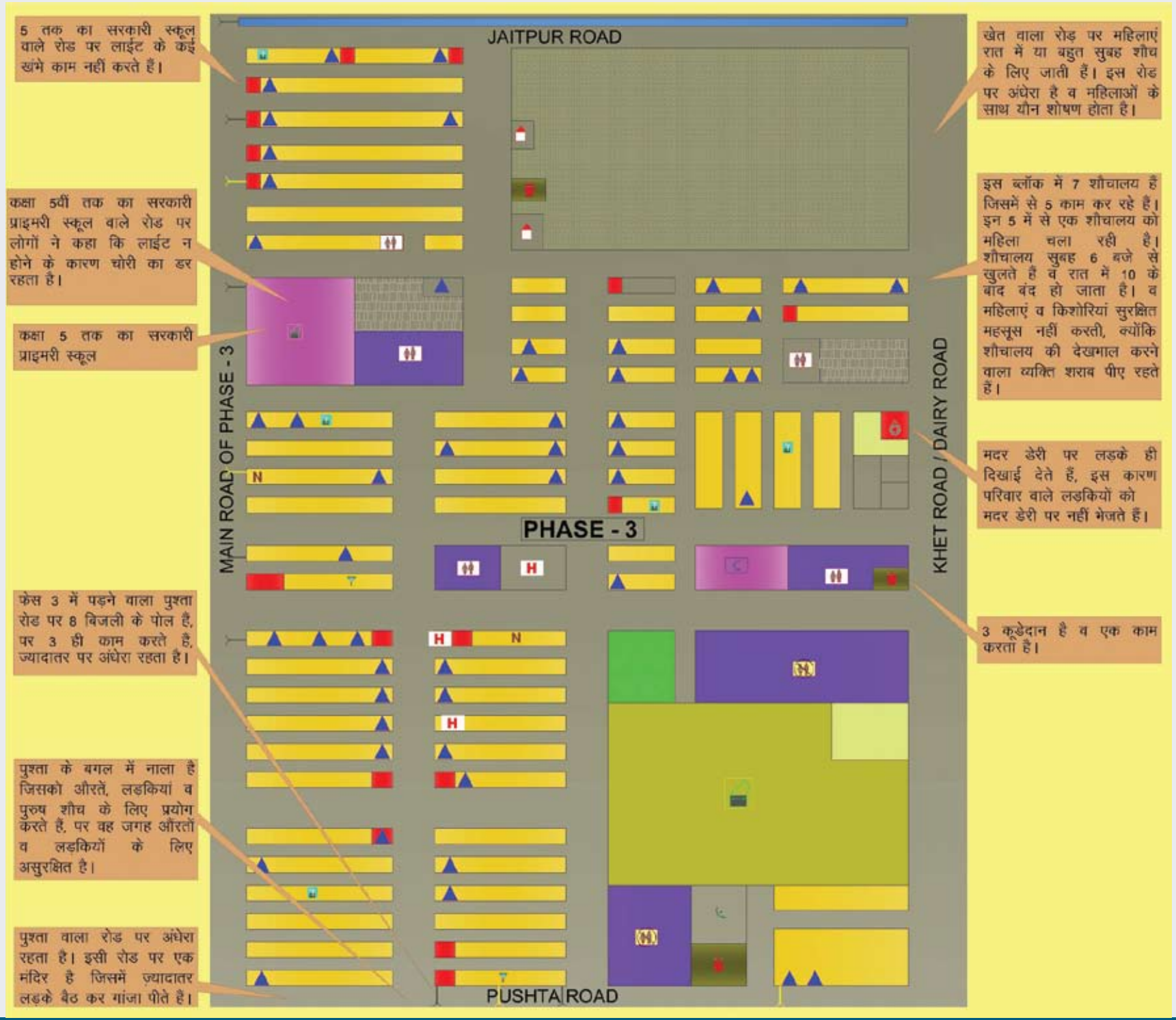
5 तक का सरकारी स्कूल वाले रोड पर लाईट के कई खंभे काम नहीं करते हैं।
कक्षा 5वीं तक का सरकारी प्राइमरी स्कूल वाले रोड पर लोगों ने कहा कि लाईट न होने के कारण चोरी का डर रहता है।
कक्षा 5 तक का सरकारी प्राइमरी स्कूल
फेस 3 में पड़ने वाला पुश्ता रोड पर 8 बिजली के पोल हैं, पर 3 ही काम करते है, ज्यादातर पर अंधेरा रहता है।
पुश्ता के बगल में नाला है जिसको औरतें, लडकियां व पुरुष शौच के लिए प्रयोग करते हैं, पर वह जगह औरतों व लड़कियों के लिए असुरक्षित है।
पुश्ता वाला रोड पर अंधेरा रहता है। इसी रोड पर एक मंदिर है जिसमें ज़्यादातर लड़के बैठ कर गांजा पीते है।
JAITPUR ROAD
MAIN ROAD OF PHASE - 3
PHASE - 3
KHET ROAD / DAIRY ROAD
PUSHTA ROAD
खेत वाला रोड़ पर महिलाएं रात में या बहुत सुबह शौच के लिए जाती हैं। इस रोड पर अंधेरा है व महिलाओं के साथ यौन शोषण होता है।
इस ब्लॉक में 7 शौचालय है जिसमें से 5 काम कर रहे हैं। इन 5 में से एक शौचालय को महिला चला रही है। शौचालय सुबह 6 बजे से खुलते हैं व रात में 10 के बाद बंद हो जाता है। व महिलाएं व किशोरियां सुरक्षित महसूस नहीं करती, क्योंकि शौचालय की देखभाल करने वाला व्यक्ति शराब पीए रहते हैं।
मदर डेरी पर लड़के ही दिखाई देते हैं, इस कारण परिवार वाले लडकियों को मदर डेरी पर नहीं भेजते हैं।
3 कूड़ेदान है व एक काम करता है।

रोशनी (लाइटिंग) संबंधी ऑडिट

लाइटिंग ऑडिट से पता चलता है कि कई बिजली के खंभों में बल्ब नहीं हैं – पुश्ता सड़क पर 7 में से 4 में; डिस्पेंसरी पार्क रोड पर 6 में से 3 में; फेज–3 की मुख्य सड़क पर 8 में और खेत की सड़क पर 9 खंभों में बल्ब नहीं लगे हैं। सड़कों पर या तो बहुत धीमी रोशनी रहती है या फिर पूरी तरह से अंधेरा है। डी ब्लॉक में ज्यादातर खम्भे काम नही कर रहें हैं। इस ब्लॉक 25 प्रतिशत बिजली के खंभों में रोशनी है व काम कर रहें है। ए–1 ब्लॉक में बिजली के खंभों की कमी नही है हर 3 या 4 मीटर की दूरी पर हैं। पर ज्यादातर पोल में लाईट नही है या बल्ब नही है या टूटी हुई हालत में है। इस ए–1 ब्लॉक में चौराहे पर, मेन रोड पर ,और पुस्ते के पास व गली में लाईट काम नही कर रही हैं। ए–2 में भी बिजली के पोल तो हैं लेकिन काम नही कर रहें है। यहां पर भी लगभग 22 से 23 प्रतिशत बिजली के पोल काम कर रहें है।

ब्लॉक बी–1 में ज्यादातर पोल में लाईट नही है या बल्ब नही है या टूटी हुई हालत में है। यहां पर भी लगभग 25 प्रतिशत बिजली के खंभों में रोशनी है। ब्लॉक बी–2 में दिन में भी कुछ पोल जलती हुई हालत में पाए गए। यहां पर भी कहें तो बाकी ब्लॉक की तरह ही हालत है। ब्लॉक सी की मेन रोड पर कुल 30 पोल हैं जिसमें से केवल दो जलते हैं। बाकी खराब पड़ें है। ब्लॉक डी दो भागो में बंटा है। डी–1 और डी–2 । डी –1 में 18 गज के प्लॉट हैं जबकि डी–2 में 18 व 12 गज के प्लॉट हैं। इस ब्लॉक में भी बिजली के खंभो की वही हालत जो अन्य ब्लॉक में हैं। जे.जे कॉलोनी खादर के इन 8 ब्लॉको में औसतन तौर पर 23 से 25 प्रतिशत बिजली के पोल काम रहें है।

युवा शोधकर्ताओं ने भ्रमण के दौरान कुछ महिला–पुरुषों से बात की काम से वापस लौट रही महिलाओं का कहना था कि मुख्य सड़क पर उन्हें असुरक्षा महसूस होती है क्योंकि वहां लाइट नहीं है; उन्होंने बताया कि छेड़खानी की घटनाएं तो आम बात है। दूसरी महिलाओं ने बताया कि जब वे रात को खुले में शौच के लिए जाती है तो उन्हें यौन हमले का डर लगा रहता है; और क्षेत्र में उपयुक्त रोशनी होने से असुरक्षा का डर कम होगा। आस–पड़ौस में चोरी की वारदातों और पुरुषों द्वारा नशीले पदार्थों के उपयोग को लेकर भी उनमें भय व्याप्त है। पुरुषों का कहना था कि आस–पड़ोस में चोरी की घटनाओं से वे असुरक्षित महसूस करते हैं और पड़ोसियों के बीच झगड़े और मारपिटाई की घटनाएं आम बात है; तथा सड़कों पर कम रोशनी होने की वजह से असुरक्षा की भावना और भी बढ़ जाती है।

इन विचार–विमर्शों के फलस्वरूप यह फैसला लिया गया कि कुछ समय तक यह देखा जाएगा कि ठोस कचरे का निबटान तथा नालियों की सफाई और पार्कों का रखरखाव का कार्य कैसे किया जाता है। इसका नियमित आधार पर दस्तावेजीकरण किया गया। सुरक्षा ऑडिट के इन परिणामों को सेवा प्रदान करने वालों के पास लेकर जाने की बात तय कि गई। जिससे आने वाले समय में मदनपुर खादर को जनसुविधा व महिला सुरक्षा की दृष्टि मजबूत बनाया जा सकें सेवा प्रदान करने वाले विभागो के साथ।

महिला प्रशिक्षण,
सन्दर्भ एवं संप्रेषण केन्द्र

बी–114, शिवालिक, मालवीय नगर, नई दिल्ली–110017
फोनः 91–11–26691219 / 26691220
हेल्पलाइनः 91–11–26692700, फैक्सः 91–11–26691221
ईमेलः jagori@jagori.org, safedelhi@jagori.org
वेबसाइटः http://www.jagori.org, http://www.safedelhi.jagori.org

जागोरी (सजग महिला)

जागोरी औरतों का प्रशिक्षण संदर्भ व सम्प्रेषण केंद्र है जिसका मुख्य लक्ष्य नारीवादी चेतना को सृजनात्मक संप्रेषण माध्यमों से आम लोगों तक पंहुचाना है। भारतीय महिला आंदोलन के साथ अपनी गहरी जड़ों को बनाये रखते हुए 1984 में नारीवादी मूल्यों पर आधारित न्यायपूर्ण समाज की स्थापना की परिकल्पना के साथ जागोरी की स्थापना हुई। जागोरी की मुख्य कार्य गतिविधि ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों की दमित शोषित महिलाओं के क्षमता विकास, जानकारी व नेटवर्किंग की आवश्यकताओं को पहचान कर उनमें नारीवादी संचेतना का प्रचार प्रसार है।

हमारे उद्देश्य

- सक्रिय शोध और नारीवादी सृजनात्मक सामग्रियों का प्रकाशन
- जेंडर समानता और महिला अधिकार पर जागरूकता बढ़ाना व नेतृत्व क्षमता का निर्माण
- सभी प्रकार की हिंसा के विरुद्ध संघर्षरत महिलाओं की मदद करना। सुरक्षा, सम्मान, न्याय और अधिकारों तक उनकी पंहुच को सुनिश्चित करना
- औरतों के संगठनों, समुदाय व सामुदायिक संस्थाओं, मीडिया और सामाजिक विकास संस्थाओं के कार्यक्रम व संसाधनों की आवश्यकताओं पर नारीवादी नज़रिए से रचनात्मक अभियान और सामग्रीयों का निमार्ण
- महिला आंदोलन को मजबूत करने व जनतांत्रिक जगहों की मांग करने के लिए पैरवी व नेटवर्किंग